विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

दुनिया में हर साल 20-25 करोड़ लोग आते हैं मलेरिया की चपेट में

गर्मी की शुरुआत के साथ ही मलेरिया के मामले बढ़ने लगते हैं। यह बीमारी न केवल भारत के लिए बल्कि दुनिया भर के अन्य देशों के लिए भी चिंता का विषय बनी हुई है। मलेरिया का प्रसार तेजी से हो रहा है और विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि इस बीमारी के प्रति लापरवाही घातक हो सकती है।

विशेषज्ञ संतुलित आहार की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मलेरिया से बचाव और पुनर्प्राप्ति दोनों के महत्व पर जोर देते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार मलेरिया के कारण हर साल बडी संख्या में लोग जान गंवा देते हैं। इससे भी कई गुणा लोग मलेरिया के चपेट में होते हैं। इस कारण सरकारों व आम लोगों पर भारी आर्थिक बोझ भी पड़ता है। 2022 में मलेरिया की चपेट में आने के कारण दुनिया भर में 60 लाख से अधिक लोगों की मौत हो गई। इस वर्ष 24.900 करोड़ (249 मिलियन) लोग मलेरिया की चपेट में आये। इनमें 94 फीसदी मलेरिया के मामले और 95 फीसदी मौत के मामले अफ्रीका महाद्वीप में दर्ज किये गये।

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत के कई हिस्सों में मलेरिया आज भी एक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। देश में कुछ खास इलाके में हर साल नियमित तौर पर मलेरिया के मामले दर्ज किये जाते हैं। इन इलाकों में 90 फीसदी से ज्यादा मामले दर्ज किये जाते हैं। आधिकारिक तौर पर दर्ज 80 फीसदी मलेरिया के मामले कुछ सीमित क्षेत्रों में पाये जाते हैं, जिनमें आदिवासी समुदाय, पहाड़ी व दुर्गम इलाके के लोग रहते हैं। वेक्टर जनित रोग नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय केंद्र (NCVBDC) के अनुसार 2001 से 2022 तक 21 सालों में मलेरिया से 20,044 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है।

वहीं गैर आधिकारिक आंकड़ों में मलेरिया से मरने वालों की संख्या कई गुणा हो सकती है। मलेरिया से होने वाली मौतों को रोकने के लिए जरूरी है रैपिड डायग्नोस्टिक टेस्ट की सुविधा, इलाज व निगरानी की व्यवस्था सुलभ हो।

दुनियाभर में हर साल मलेरिया के लाखों मामले सामने आते हैं। मलेरिया से मरने वालों की संख्या भी काफी ज्यादा होती है। भारत ने हाल के वर्षों में मलेरिया उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है और इसके लिए वैश्विक स्तर पर भारत की प्रशंसा की गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मलेरिया उन्मूलन के लिए 11 देशों में विशेष पहल की है। कोरोना के दौरान मलेरिया के मामलों में विश्व में केवल भारत में गिरावट दर्ज की गई। भारत सरकार के अनुसार 2015 से 2023 के बीच मलेरिया के मामलों में 85 प्रतिशत से अधिक की कमी आई और मलेरिया से मौत के मामलों में 83 प्रतिशत से अधिक की कमी दर्ज की गई। देश में मौसम परिवर्तन का अनूठा खेल चल रहा है। बेमौसम बारिश के साथ वातावरण में गर्मी, ठण्ड और नमी का मिलाजुला वातावरण व्याप्त हो रहा है। जिस कारण मच्छरों ने घर-घर दस्तक दे दी है जो मलेरिया का मुख्य कारक है।

देश में मौसम परिवर्तन का अनूठा खेल चल रहा है। बेमौसम बारिश के साथ वातावरण में गर्मी, ठण्ड और नमी का मिलाजुला वातावरण व्याप्त हो रहा है। जिस कारण मच्छरों ने घर घर दस्तक दे दी है जो मलेरिया का मुख्य कारक है। मलेरिया तेज बुखार वाली बीमारी है। यह संक्रमित मादा एनोफेलीज मच्छर के काटने से फैलती है।

मलेरिया तेज बुखार वाली बीमारी है। यह संक्रमित मादा एनोफेलीज मच्छर के काटने से फैलती है। यह मच्छर साफ पानी में अंडे देती है। इस रोग को फैलाने वाले परजीवी को प्लाज्मोडियम कहते है। देश इस समय जानलेवा वायरस कोरोना से जूझ रहा है। वहीं बारिश और गर्मी में मौसमी बीमारियों के बढने का भी खतरा होने लगता है।

देश पहले ही कोरोना महामारी के चपेट में है। ऐसे में हम सभी को मलेरिया और अन्य मौसमी बीमारियों से सतर्कता और जागरूकता रखनी चाहिए। मलेरिया बीमारी मच्छर के काटने से होती है इसलिए बच्चों से बुजुर्गों तक को मच्छरों से बचाव रखना चाहिए। इसके लिए आप अपने घर के आसपास पानी न भरने दें। बारिश के मौसम में किसी भी कंटेनर आदि में पानी जमा न होने दें और समय-समय पर कूलर को साफ करें।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार हमारे देश में मुख्यत: दो प्रकार का मलेरिया पाया जाता है। प्लाजमोडियम फैल्सीफेरम एवं प्लाज्मोडियम वाईवेक्स। ये मच्छर जब मलेरिया से ग्रसित व्यक्ति को काटता है तब उसके खून में मौजूद प्लाज्मोडियम को अपने शरीर में खींच लेता है। लगभग आठ से दस दिन तक ये मच्छर मलेरिया फैलाने में सक्षम हो जाता है। यह परजीवी लार के साथ उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है। जिससे स्वास्थ्य व्यक्ति भी मलेरिया से ग्रसित हो जाता है। मच्छर प्रजनन के कारण बारिश के दौरान और बारिश के बाद यह रोग अधिक लोगों को होता है। रोगी को समय पर उपचार मिलना आवश्यक है। इलाज मिले तो मलेरिया के लक्षण जल्द ही ठीक होने लगते हैं। पूरी तरह ठीक होने में मरीजों को कम से कम दो हफ्ते का समय लगता है। समय पर इलाज ना मिले तो कई बार ये बीमारी बार-बार होने की आशंका भी बनी रहती है। सही इलाज नहीं होने से प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होने लगती है और कई अन्य तरह की बीमारियां भी घेर लेती हैं। इसलिए हमें पूरी सावधानी रखनी होगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नेपाल, भूटान, दक्षिण अफ्रीका, बोत्सवाना, ईरान सहित 25 देशों को मलेरिया मुक्त करने के लिए एक नई पहल ई-2025 शुरु की है जिसका लक्ष्य अगले 5 वर्षों में 25 और देशों को मलेरिया मुक्त करना है। इस पहल के तहत इन देशों को मलेरिया मुक्त करने के लिए विशेष समर्थन और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करेगा। मलेरिया एक वाहक जनित संक्रामक रोग होता है। यह सबसे प्रचलित संक्रामक रोगों में से एक है।

आंकड़ों पर गौर करें तो अभी भी दुनिया को पूरी तरह मलेरिया मुक्त करने की मंजिल काफी दूर है। जिस तरह से दुनिया कोरोना महामारी का सामना कर रही है, उसने मलेरिया के खिलाफ जारी जंग पर असर डाला है। आज पूरे विश्व का ध्यान कोरोना से लड़ने पर है । इस बीच अन्य बीमारियों के प्रति चेतना में कमी आई है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 16 मई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, मघा नक्षत्र सांय 6:41 तक, धुव्र योग प्रात: 8:23 तक, बव करण प्रात: 6:23 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सांय 6:14 से आरम्भ होगा। आज अष्टमी तिथि में वृद्धि हुई है। आज जानकी नवमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:23 तक, चर 10:43 से 12:23 तक, लाभ-अमृत 12:23 से 3:43 तक, शुभ 5:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:04

मेष
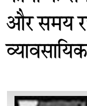
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
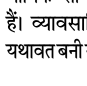
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
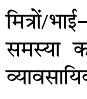
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/भाई-बंधुओं के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क
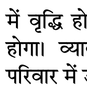
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
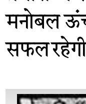
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। नवीन कारोबारी वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
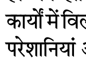
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

तुला
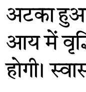
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक
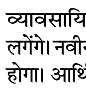
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
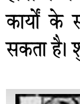
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मकर
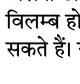
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
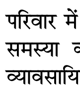
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
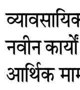
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

चुनाव में आचार संहिता का औचित्य क्या है?

प्रो. अशोक कुमार

भारतीय चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित 'जनरल इलेक्शंस 2019' एन एटलस', के मुताबिक, भारत के पहले आम चुनाव की प्रक्रिया 25 अक्टूबर, 1951 को शुरू हुई और यह चार महीने तक चलकर 21 फ़रवरी, 1952 को पूरी हुई थी! इसके बाद 17 अप्रैल 1952 को पहली लोकसभा का गठन हुआ था। साल 1962 से 1989 के बीच आम चुनाव चार से 10 दिनों के बीच पूरे हो जाते थे। 1980 में चार दिवसीय चुनाव देश के अब तक के सबसे छोटे चुनाव थे। देश में पहले और दूसरे आम चुनाव में लगने वाले महीनों तक के वक्त के मुकाबले सातवां लोकसभा चुनाव 1980 महज चार दिन में पूरा हो गया था। तीन जनवरी को शुरू होकर छह जनवरी 1980 को यह आम चुनाव संपन्न हो गया था।

देश में लोकसभा चुनाव 2024 की रणभेरी बज गई है। 18वीं लोकसभा के लिए देश के लगभग 97 करोड़ मतदाता अपने सांसद चुनने वाले हैं। भारतीय निर्वाचन आयोग (ण्ंइ) ने शनिवार को लोकसभा चुनाव 2024 का कार्यक्रम जारी कर दिया है। देश की 543 लोकसभा सीटों पर सात चरणों में वोट डाले जाएंगे। लोकसभा चुनाव 19 अप्रैल 2024 से शुरू होगा और चुनाव के परिणाम 04 जून 2024 को घोषित किए जाएंगे।

जिस दिन से चुनाव आयोग चुनाव की तिथि घोषित कर देता है उस दिन से पूरे देश में आचार संहिता लागू हो जाती है! इस आचार संहिता में विभिन्न प्रशासनिक, सामाजिक गतिविधियों पर रोक लग जाती है।

वर्तमान समय में ऐसा देखा गया है की जब आचार संहिता लागू हो जाती है और नामांकन प्रक्रिया शुरू होने के पहले और होने के बाद अधिक संख्या में राजनीतिक दल बदल की प्रक्रिया शुरू हो जाती है! राजनीतिक टिकट वितरण के साथ ही, जब किसी नेता को टिकिट नहीं मिलता तब वह दूसरी पार्टी मे दल बदल लेता है! आजकल क्योंकि चुनाव की एक लंबी प्रतिक्रिया होती है, चुनाव कई चरणों में होता है, इस प्रक्रिया के दौरान बहुत सारे चुनाव की ओपिनियन पोल आती रहती हैं या एक चुनाव का माहौल बन जाता है जिसमें समय-समय पर यह मालूम चलता है की अब एक पार्टी का जोर चल रहा है या किसी अन्य पार्टी का जोर चल रहा है और उसको देखते हुए नेता अपना दल बदलने की कोशिश करते हैं! मेरा यह सुझाव है की जैसे ही आचार संहिता लागू हो जाए उसके बाद से चुनाव परिणाम तक राजनीतिक दल बदल को अवैध माना जाए।

चुनाव के समय जब नामांकन शुरू होता है और उसके बाद जिस दिन चुनाव केन्द्रों पर मतदान होता है उसके 24 घंटे पहले उस स्थान पर चुनाव प्रचार रोक दिया जाता है! वर्तमान समय में चुनाव प्रचार रोकने का कोई औचित्य सफल नहीं है! पूर्व में चुनाव की अवधि कम हुआ करती थी और टीवी, दूरसंचार, इंटरनेट आदि आधुनिक कम्युनिकेशन का उपयोग नहीं होता था लेकिन आजकल मीडिया एक प्रचार का मुख्य तंत्र बन गया है और इस मीडिया के कारण आप देश भर में किसी भी कोने में चुनाव का प्रचार कीजिए वो दुनिया के हर कोने में आसानी से मतदाताओं तक पहुंच जाता है! ऐसा देखा गया है कि हम लोकसभा के चुनाव में जिस क्षेत्र में मतदान होना है उसमें 24 घंटे पहले प्रचार की प्रक्रिया समाप्त कर देते हैं लेकिन क्योंकि किसी अन्य क्षेत्र में मतदान की प्रक्रिया कुछ दिन बाद होनी है इसलिए सभी नेता दूसरे मतदान क्षेत्र पर पहुंचकर और विशेष कर जिस दिन किसी अन्य स्थान पर मतदान होना है, जहां पर उनका प्रचार करना पर पाबंदी लगा दी गई थी वह किसी अन्य क्षेत्र में बहुत ही जोरो से, बहुत ही वैभव के साथ प्रचार अवश्य करते हैं! जितना बड़ा नेता होता है उसका प्रचार का कवरेज हर मीडिया ग्रुप करता है, हर टीवी चैनल करता है और वह चुनाव के लिए अपना प्रचार करने में सफल हो जाता है! इसलिए मैं समझता हूं कि यह चुनाव में 24 घंटे पहले की प्रचार की अवधि को समाप्त किया जाए या फिर चुनाव आयोग को कोई नए नियम लागू करने पड़ेंगे जो चुनाव प्रचार के लिए रोकथाम समय पर संभव हो सके।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

ऐसी फिल्म्स की अनुमति क्यों दी जाती है?

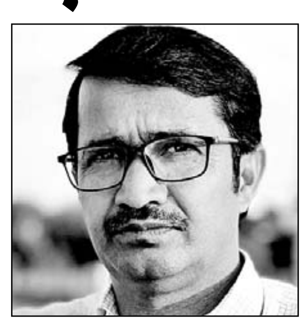

रामगोपाल जाट

सोशल मीडिया पर आजकल हीरामंडी नामक फिल्म की चर्चा जोरों पर चल रही है। कुछ प्रबुद्धजनों के लेख पढ़कर फिल्म से समाज पर हो रहे नुकसान का आकलन किया जा सकता है। इससे पहले जानवर फिल्म को लेकर भी बुद्धिजीवी लोगों की टिप्पणी पढ़कर मन बहुत व्यथित हुआ। एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् ने तो यहां तक कहा कि जानवर जैसी फिल्म्स समाज को 10 वर्ष पीछे ले जाती है, इस तरह की मूवी नहीं बननी चाहिए। संजय लीला भंसाली की फिल्म्स में जो भव्यता होती है, वो पैसे के दम पर हासिल की जा सकती है, लेकिन उनकी मूवीज से समाज का जो नुकसान हो रहा है, उसकी भरपाई न तो की जा सकती है और न ही युवाओं को उससे होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

देश में फिल्म सेंसर बोर्ड है, जो हर फिल्म को देखकर उसको प्रमाण पत्र देता है, उसके पोस्टर पर उसकी कैटेगरी लिखी जाती है, लेकिन क्या इतना सा लिख देना या चेतावनी दे देना ही सब कुछ है? आज बच्चों के हाथ में मोबाइल होता है, इंटरनेट अनलिमिटेड मिल रहा है, सुबह से शाम तक बच्चे अपने परिजनों से जिद करके मोबाइल देखते रहते हैं। किसी तरह की कोई रोक नहीं है, सोशल मीडिया पर तो फिर भी थोड़ा बहुत नियंत्रण होता है, लेकिन उसके अलावा इतनी साइट्स हैं, जिनके बारे में माता-पिता को पता ही नहीं है। बदलते वातावरण और इंटरनेट की दुनिया को समझने में बच्चे बहुत तेज होते हैं। उनको नई-नई साइट्स का पता होता है।

सरकार बहुत शान से कहती है, बीते 10 साल में इंटरनेट को इतना सस्ता और आमजन की पहुंच में कर दिया है कि एक ठेले वाला भी आसानी से इंटरनेट का मजा ले सकता है। यह बात सही है कि आज दुनिया में सबसे अधिक इंटरनेट उपभोक्ता भारत में है। इंटरनेट का जाल भी भारत में सर्वाधिक वाले देशों में है। इंटरनेट उपलब्ध कराने वाली कंपनी के द्वारा सस्ते से सस्ता इंटरनेट पैकेज दिया जा रहा है। हाथ में मोबाइल से देश दुनिया की तमाम चीजों के बारे में जानना बेहद आसान हो गया है। केंद्र सरकार ने इस दिशा में बहुत काम किया है, जिसकी सराहना करना जरूरी है, लेकिन इन सब के साथ ही सरकार की कुछ जिम्मेदारियां भी बनती हैं, जिनको कोई उठाना ही नहीं चाहता। सरकार इन दिनों चुनाव में व्यस्त है, तो ब्यूरोक्रेसी के पास इन चीजों के लिए समय ही नहीं है। फिल्म निर्माता आज सिनेमा हॉल के भरोसे नहीं है, जहां पर युवा पहुंचना कम कर चुका है। आज ओटीटी प्लेटफॉर्म है, जो हर हाथ में उपलब्ध है। ओटीटी आने के बाद तो अश्लीलता और निकृष्टता की सारी हदें पार हो चुकी हैं। यहां पर अपराध करने के नए-नए तरीके बताए जाते हैं, लड़कियों के साथ संपर्क बनाने के नए आइडिया सिखाए जाते हैं और समाज को कमजोर करने की हर संभव कोशिश की जा रही है। नशाखोरी ऐसे सिखाई जा रही है, जैसे समाज हित में कोई बहुत बड़ा कार्य किया जा रहा है।

सरकार इन सब पर वैसे ही आंखें मूंदकर बैठी है, जैसे बिल्ली को आते देख कबूतर आंखें मूंदकर बैठ जाता है। क्या सरकार के इस रवैये से आने वाला खतरा टल रहा है? क्या समाज के ऊपर, युवाओं के भविष्य के ऊपर पड़ने वाला दुष्प्रभाव असर नहीं कर रहा है? क्या सरकार अपनी जिम्मेदारी से नहीं भाग रही है? आखिर सरकार के जिम्मेदार अधिकारी तेजी से आ रहे इन खतरों से अनभिज्ञ बनकर क्यों बैठे हैं? सेंसर बोर्ड अब बीते जमाने की बात हो चुकी है, उसमें न तो इतना दम है और न ही उसकी इतना क्षमताएं हैं, कि इस एजेंडे को रोक सके। रूस-यूक्रेन युद्ध को डेढ़ साल बीत गया, इस्राइल-हमास युद्ध को कई महीने बीत चुके हैं, लेकिन यूएन कुछ कर पा रहा है? कुछ नहीं! कारण यह है कि यूएन के पास इतनी ताकत नहीं है कि वो किसी युद्ध को रोक सके। ये सब काम अमेरिका, रूस, जापान, भारत, चीन जैसे शक्तिशाली देश ही कर सकते हैं। ठीक ऐसे ही सेंसर बोर्ड भी यूएन बन गया है। सेंसर बोर्ड दंतवीहीन है, उसके पास करने को अधिक कुछ है ही नहीं।

इस मामले में सरकार को सख्त कानून बनाकर एक नई संस्था बनानी होगी या सेंसर बोर्ड को और अधिक शक्तियां देकर पर्याप्त संसाधन देने होंगे कि फिल्म्स की अश्लीलता, एजेंडा, आपराधिक प्रवृत्ति वाले दृश्यों पर रोक लगा सके। ओटीटी पर आने वाली सीरीज को सेंसर कर सके। धारावाहिकों में सभ्यता-संस्कृति विरोधी कंटेंट को हटा सके। इंटरनेट की इस दुनिया में हम देख रहे हैं कि हमारी भव्य और सभ्य विरासत खोती जा रही है। परिवारों में तनाव, बच्चों में कुंठित होने की भावना, महिलाओं का बदलता मिजाज, आपसी विश्वास की कमी, बढ़ते अपराध फिल्म्स, धारावाहिक और ओटीटी की देन हैं। इस पर नियंत्रण को लेकर कई बुद्धिजीवी जन चिंता जाहिर कर चुके हैं, लेकिन सरकार ने अभी तक एक कदम नहीं उठाया है। आज सट्टेबाजी के इतने मोबाइल एप्प हैं कि बहुत बड़ा घोटाला हो जाता है, तब तक तो सरकार को पता ही नहीं चलता। जब तक सरकार को पता चलता है, तब तक लाखों लोग लुट चुके होते हैं। आईपीएल चल रहा है, कई सट्टेबाजी एप्प के विज्ञापन क्रिकेटर कर रहे हैं। पिछले साल के आंकड़े बताते हैं कि इन एप्स की कमाई 6800 करोड़ से अधिक थी। ऐसे में कौन नहीं चाहेगा कि इसको बढ़ाया जाए। पिछले आईपीएल में क्रिकेटर इनका विज्ञापन नहीं करते थे, इस बार ऐसा कोई क्रिकेटर नहीं है जो इनके विज्ञापन में शामिल नहीं है। इसका मतलब इस बार कमाई कई गुणा बढ़ने वाली है। पिछले साल के मुकाबले यदि 100 गुणा भी बढ़ी तो 6,80,000 करोड़ हो जाएगी, जो कोई बड़ी बात नहीं है।

सरकार को इसके लिए एक अलग से मंत्रालय का गठन करके निगरानी रखनी चाहिए और समाज से सुझाव लेने चाहिए कि क्या जो कंटेंट फिल्म, धारावाहिक और ओटीटी के द्वारा परोसा जा रहा है, उसपर नियंत्रण किया जाना चाहिए। करोड़ों लोग दुखी हैं कि जो कंटेंट परोसा जा रहा है, वो बेहद चिंतनीय है, लेकिन फिर भी सरकार आंखें मूंदकर बैठी है, जो बेहद खतरनाक है।

–रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

सूफी संत ख्वाजा साहब की महाना छठी मनाई, दरगाह परिसर में अकीदतमंद उमड़े

अकीदतमंदों ने मुल्क में अमन चैन, शांति, खुशहाली, भाईचारे के लिए दुआ मांगी

अजमेर, (कासं)। सूफी संत हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती की महाना छठी बुधवार धार्मिक रीति-रिवाज के साथ अकीदत से मनाई। छठी पर्व पर संपूर्ण दरगाह परिसर अकीदतमंदों से खचाखच भरा रहा। दरगाह परिसर में फातिहाख्वानी के बाद मुल्क में अमन चैन, शांति, खुशहाली, भाईचारे के लिए दुआ मांगी और अकीदतमंदों को तबर्रुक तकसीम किया।

जानकारी के अनुसार सूफी संत हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती की महाना छठी बुधवार को दरगाह परिसर में अदब व धार्मिक रीति रिवाज के साथ मनाई गई।

दरगाह के अहाता ए नूर में सुबह 9 बजे कुरान शरीफ की तिलावत से छठी का आगाज हुआ। खुद्दाम ए ख्वाजा की ओर से रस्म अदा कराई गई। शिजराख्वानी और सलातो सलाम पेश किया गया।

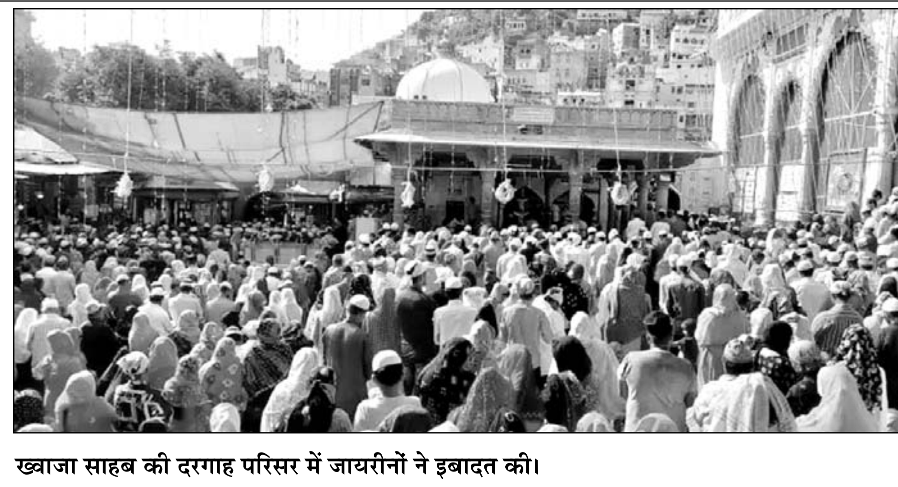

ख्वाजा साहब की दरगाह परिसर में जायरीनों ने इबादत की।

- **छठी की रस्म के बाद देश के विभिन्न हिस्सों से आए जायरीन ने तबर्रुक पर नियाज दिलाई**

इस मौके पर अहाता ए नूर के साथ दरगाह परिसर जायरीन से खचाखच भरा हुआ था। बड़ी संख्या में महिला जायरीन भी शरीक हुए। छठी की रस्म के बाद देश के विभिन्न हिस्सों से आए जायरीन ने तबर्रुक पर नियाज दिलाई। तबर्रुक पाने के लिए भी जायरीन में होड़ लगी नजर आई, इधर अंजुमन सैयदजादगान की ओर से लंगर का आयोजन किया गया।

यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे की पहल

- **रेलवे ने यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप में बदलाव किए**
- **अब यात्री किसी भी स्थान से बुक करवा सकेंगे जनरल टिकट**

अजमेर, (कासं)। रेलवे ने साधारण श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों को आसान टिकट सुविधा उपलब्ध कराने के लिए पहल की है। रेलवे ने यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप में बदलाव किए हैं। अब यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप के माध्यम से टिकट बुक करने की दूरी 20 किलोमीटर की सीमा को समाप्त कर दिया है। यात्री अब किसी भी स्थान से जनरल टिकट बुक करवा सकेंगे। रेलवे ने साधारण श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों को आसान टिकट सुविधा प्रदान करने के लिए यूटीएस ऑन मोबाइल एप में अहम बदलाव किया है। यूटीएस ऑन मोबाइल एप के माध्यम से टिकट बुक करने की दूरी की सीमा को समाप्त कर दिया गया है जिसके फलस्वरूप अब जनरल टिकट किसी भी स्थान से बुक किए जा सकते हैं।उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार रेलवे ने साधारण श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यूटीएस ऑन मोबाइल एप में बड़ा बदलाव किया है, जिसमें जनरल टिकट बुक करवाने की दूरी सीमा को समाप्त कर दिया गया है। इस सुविधा के प्रारम्भ होने के फलस्वरूप अब यात्री जनरल टिकट किसी भी स्थान से बुक करवा सकते हैं।20 किमी की दूरी को किया समाप्त:-उन्होंने बताया कि पूर्व यूटीएस ऑन मोबाइल एप के माध्यम से जनरल टिकट बुक करने की अधिकतम दूरी सीमा 20 किलोमीटर थी अर्थात् कोई भी यात्री स्टेशन के प्लेटफार्म से 20 किलोमीटर से अधिक दूरी होने पर टिकट बुक नहीं करवा सकता था। आब दूरी सीमा को समाप्त करने से जनरल टिकट कहीं से भी ऑनलाइन बुक हो सकता है।

बिजली की अघोषित कटौती से ग्रामीणों में आक्रोश

- **बिजली कटौती के कारण कई ग्रामों में पेयजल संकट खड़ा हुआ**

पावटा, (निसं)। गर्मी के दस्तक देते ही क्षेत्र में एक सप्ताह से बार-बार ट्रीपिंग व बिजली कटौती हो रही है। इससे पड़ रही इस भीषण गर्मी में लोगों का हाल बेहाल हो गया है। भीषण गर्मी भरे इस मौसम में क्षेत्र में प्रतिदिन कई बार लोगों को अघोषित कटौती का सामना करना पड़ता है।

सुरेश शर्मा, सुरेश नयाबासी, दिनेश शर्मा, मुकेश गोयल, राजेश शर्मा, बाबूलाल बहरोडिया, दौलत अग्रवाल, गिरिराज गोयल सहित लोगों का कहना है कि तेज धूप व उमस ने सभी को परेशान करके रखा है, ऊपर से बिजली की आंख मिचौली व अघोषित कटौती इस समय आग में घी डालने का काम करती है। रात हो या दिन किसी भी वक्त बिजली गुल हो जाती है। एक दिन में आठ से दस बार बिजली गुल होना आम बात हो गई है और रात के वक्त लो वोल्टेज के कारण कूलर व पंखे काम करना बंद कर देते हैं। बिजली की इस आंख मिचौली के कारण छोटे-छोटे बच्चों को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं।

क्षेत्र में कब बिजली आएगी और कब कटेगी, इसकी कोई समय-सारणी ही नहीं है। बिजली कटौती ने लोगों का जीना हराम कर दिया है। बावजूद इसके बिजली विभाग द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

यह स्थिति क्षेत्र में लगातार बनी हुई है। गर्मी के मौसम में लोगों को नियमित रूप से बिजली नहीं मिलने से परेशानी और भी बढ़ गई है। मौसम में परिवर्तन आने के बाद ही बिजली की आपूर्ति में भी परिवर्तन होने लगा है। जिसका सबसे अधिक असर छात्रों व किसानों पर पड़ रहा है। वहीं बिजली पर आधारित उद्योग धन्धे प्रभावित हो रहे हैं। एक सप्ताह से बनी अघोषित बिजली कटौती का यह आलम है कि बिजली कटौती इस प्रकार हो रही है कि मानो जैसे कोई लुकाछिपी का खेल बना रखा हो। वहीं इस कटौती के कारण कई ग्रामों में पेयजल संकट खड़ा हो गया। ग्रामीणों ने बताया कि पेयजल की निर्भरता जलदाय विभाग की आपूर्ति पर होने के कारण इन ग्रामीणों को पेयजल के लिए भटकना पड रहा है।

कनिष्ठ जलदाय अभियन्ता दयाराम चौधरी ने बताया कि बिजली की बार-बार कटौती के चलते पानी की टंकी भरने में भी परेशानी का सामना करना पड रहा है। मोटर चालू होने के बाद जैसे ही पानी टंकी तक पहुंचता है, वैसे ही बिजली गायब हो जाती है जिससे टंकियों में पानी का संग्रहण नहीं हो पाने से आपूर्ति प्रभावित हो रही है।